1857 और हरियाणा उदय की पृष्ठभूमि

निक्कू नेहरा
रोहतक

10 मइ 1857 को अम्बाला तथा मेरठ के सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह दिल्ली में गड़बड़ी का आधार बन गया, 13 मई को क्रांतिकारी गुड़गांव पहुँच गए। इस विद्रोह में रिवाड़ी के राव तुला राम, झज्जर के अब्दुल समद खां तथा हिसार के मुहमद अजीम का अपना समर्पण था। ''16 नवम्बर को अंग्रेज लेफ्टिनेंट गेराई की मृत्यु और खरखौदा में आक्रोश तथा अंग्रेज अधिकारी हडसन का विरोध हरियाणा का अपना आक्रोश था। यह तो निश्चित है कि हरियाणा का अपना योगदान''[1] 1857 के विद्रोह में बहुत बड़ा रहां इस बात पर चच्र से पूर्व हम इसके कारणों को जानने की कोशिश करेंगे। बहुत सारे कारणों में एक मुख्य कारण यह भी हो सकता, यह दौर पूरे भारत में ब्रिटिश विरोधी दौर था, पंजाब भी भारत का सक्रिय राजनीतिक अंग था, दूसरा यह धीरे–धीरे प्रकट हो रही नई व्यवस्था के विरूद्ध पुरातन व्यवस्था का विद्रोह था। यह नई व्यवस्था कई कारणों का परिणाम थी। उदाहरण रेल का चलना इसमें प्रमुख कारण था, गौण कारणों में सरकारी कार्यप्रणाली में पुरातन कर्मियों के निकालने की योजना का था। एक अतिरिक्त कारण की बात की जाए वर्गभेद की नीति के परिणाम स्वरूप हिन्दू मुस्लिम एकता प्रगाढ़ हो गाई। ''इसमें अंतिम एवं महत्वपूर्ण कारण चिंगारी के रूप में चर्बी वाले कारतूस रहे हैं।''[2] क्रांति से पूर्व के नेता अंतिम मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर ने अपनी जनता से आहवान करते हुए एक घोषणा पत्र जारी किया जो अंग्रेजों के प्रति आक्रोश का प्रति फलन था, ''भारत के हिन्दुओं और मुसलमानों उठो, परमात्मा के सभी वरदानों में स्वराज ही उसका दिया हुआ सर्वोत्तम वरदान है। जिस शैतान ने उसे हमसे छल से छीन लिया है, देखे वह कब तक इसे संभाल सकता है।''[3] यह आवाज दिल्ली के लाल किले से आई थी जिसका सबसे पहले अनुगूंज दिल्ली से सटे हरियाणा में सुनाई दी। यह अलग बात है कि इस विद्रोह का पहला विचार नाना साहिब के मन में उठा था। नाना साहब का मुख्य परामर्श दाता अजीमुल्ला था। जो अत्यंत याग्य था और भारत के पक्ष में रूस तथा तर्की से सहायता प्राप्त करने का इच्छुक था। यह अलग बात रही कि वह इस बारे में रूस व टर्की से कोई सहायता प्राप्त नहीं कर पाया। नाना साहब ने विचार किया कि जब भारतीय जनमानस इसके लिए तैयार नहीं होगा तब तक इसमें सफलता नहीं मिलेगो। इसीलिए उन्होंने देशी राज्यों, रियासतों एवं रजवाड़ों के साथ भारतीय अंग्रेजी सैनिकों से सम्पर्क अभियान चलाया और विद्रोह के लिए 31 मई 1857 का दिन निश्चित हुआ। लेकिन संयोग से 29 मार्च को बंगाल की बैरकपुर पलटन के सिपाही पंडित मंगल पांउे ने चर्बी वाले कारतूस के विरोध में अपराधी करार देते हुए फांसी की सजा दे दी गई। इस घटना का समाचार पूरे देश में आग की भाँति फैल गया और 10 मई को भारत में अंग्रेजों की सैनिकी करते सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह

खुले आम था और इसमें भारतीय सैनिक अंगज अधिकारियों को धड़ाधड़ मार रहे थे और साथ अंग्रेज की जेलों बन्दीं भारतीयों को छुड़वा रहे थे। ''यह विद्रोह खुला था और भारत के सभी हिस्सों में था। विशेषरूप से उत्तर भारत में हरियाणा में इसकी शुरूआत 10 मई 1857 को अम्बाला की छावनी से हुई थी। ''[4] फैलते–फैलते पूरे हरियाणा में फैल गई। हिसार में जनरल बैनकोर्ट लैंड तथा कैप्टन रार्वटसन रानियां सिरसा के नवाब नूर मुहम्मद का भारी विरोध करना पड़ा। करनाल व पानीपत के क्षेत्र के कैप्टन ह्यूज को ग्रामिणों ने धुल चटाई। करनाल के नाब तथा पटियाला क राजा की मित्रता सिक्ख–मुस्लिम मित्रता का अनुपम ऐतिहासिक उदाहरण जो 1857 के विद्रोह के दौरान हुई थी। कैप्टन मीकलैन तथा लैफ्टिनेंट पियर्सन को मुँह की खानी पड़ी। लाडवा तथा असंध में अंग्रेजों को मुँह तोड़ जवाब मिला। ''रोपड़ के सरदार अंग्रजों के खिलाफ इस विद्रोह में अपना योगदान दे रहे थे।''[5] पश्चिमी पंजाब के कुछ सरदार इस विद्रोह में चुप रहे। अब सभी का ध्यान दिल्ली की ओर केन्द्रित हो गया और उन्होंने दिल्ली की ओर कूच किया। 16 मई को दिल्ली के लाल किले में सम्राट बहादुरशाह जफर को विद्रोह का नेता घोषित किया और विद्रोह को स्वतंत्रता संग्राम के नाम से शुशोभित किया। हर हर महादेव, मारो फिरंगी को इस संग्राम का नारा बना। दिल्ली अब मुक्त थी, इसकी मुक्ति का समाचार सब ओर आग की तरह फैल गया। 24 मई तक अलीगढ़, इटावा, मैनपुरी तथा दिल्ली के आस–पास हरियाणा में स्वतंत्रता का बिगुल जन मानस में बज गया। अब तक तो सैनिक विद्रोह था, अब स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित न रहकर महासंग्राम बन गया। रोहतक, गुड़गाँव, झज्जर, भिवानी, रेवाड़ी और फारूखनगर में युद्ध की दुंदुभी बजने लगी। देशी पलटन एवं देशी जनता अब अंग्रेजों के खिलाफ थी।

''1857 का विद्रोह जितनी शीघ्रता से फैला, उतनी ही शीघ्रता से इसका अंत कर दिया।''[6] इसके अंत को हरियाणा ने 1966ई0 तक झेला जब तक पंजाब पुनर्गठन एक्ट पारित नहीं हुआ। अब दमन के बाद अंग्रेजों ने अपना आंकलन करते हुए भारत की शासन व्यवस्था को पुनर्गठित किया गया परिणाम यह हुआ कि 1858 में हरियाणा को विनियम जिलों से अलग करके सर जॉन लॉरेंस के प्रशासन में पंजाब में मिला दिया। इतना ही नहीं इसका क्षेत्र उन पंजाबी सरदारों में बांट दिया जो 1857 के दौरान शांत थे। पटियाला के महाराज को नारनौल और मादौड़ मिला तथा जींद के महाराजा को दादरी, नाभा के राजा को झज्जर दे दिया गया। नवम्बर 1858 को लॉर्ड कैनिग ने महारानी विक्टोरिया की घोषणा पढ़ी जिसमें भारत में कम्पनी का शासन समाप्त हो गया और भारत को ब्रिटिश सरकार ने सीधा अपने अधीन ले लिया गया। अब हरियाणा का अतीत ब्रिटिश भारत के अतीत का ही अंग बन गया।

हरियाणा चूंकि अब पंजाब के अधीन था। यह हरियाणा का दुर्भाग्य था, यह दुर्भाग्य 1966 तक हरियाणा के लोगों ने सहन किया। इसे पिछड़े प्रदेश के अर्न्तगत मानकर आर्थिक, सामाजिक उन्नति के साथ सांस्कृतिक उन्नयन को धीमा कर दिया। फलतः यह हरियाणा के इतिहास का काला अध्याय सिद्ध हुआ। उस समय के प्रसिद्ध हिन्दु बुद्धिजीवी ब्राह्मण नेता देवेन्द्र नाथ टैगोर ने इसके परिणाओं का अवलोकन किया तथा बहादुरशाह जफर की गिरफ्तारी को अपनी आंखों से देखा। उन्होंने लिखा है, ''इस दुखमय संसार से किसी की नियति कें विषय में क्या कहा जा सकता है।''[7]

यह उदासीनता भारतीय जनमानस के प्रतिनिधित्व के रूप में अपने देश के प्रति गहन श्रद्धा रखने और उस पर गर्व करने वाले व्यक्ति का जो निःसंदेह ही विदेशी प्रतिनिधित नहीं था। देश निकाला बहुत बड़ी सजा है। शायद जीवन मृत्यु इसी का नाम है।

हरियाणा आज के परिप्रेक्ष्य में एक तरह से 1857 के विद्रोह का प्रतिफलन था। यह पंजाब का विभाजन है। इतिहास विभाजन के बारे में बताते हैं कि विभाजन कभी भी सुखद नहीं होता खास उसी प्रजा के लिए और उसके राजा के लिए। इससे उसकी सीमाएं सीमित हो जाते है। आर्थिक उन्नति रूक जाती है, समाजिक सरोकार कट जाते हैं। पंजाब सूबा और हिंदी सूबा इसी का परिणाम था। 1925 में हरियाणा क्षेत्र को (हिंदी सूबा) दिल्ली में मिलाने के लिए जनसमूह ने प्रयास किया किन्तु सफलता नहीं मिली। 1928 में सर्वदलीय की बैठक में भी यहीं मांग दोहराई सफलता अब भी नहीं मिली। 1932 में विश्वबंधु गुप्त ने इस बात का पुनः चच्रा में किया परन्तु अब भी बात सिरे नहीं चढ़ पाई। चलते–चलते 1947 आ गया पर हरियाणा अभी भी पंजाब का हिंदी सूबा रहा। कभी सच्चर नीति लागू होती कभी 1956 की जवाहर लाल की मीटिंग। सफलता तो अब भी नहीं मिली। फजल अली ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी। ''हरियाणा के भाग्य अनंत सफलता लिखी थी जो 1 नवम्बर 1966 को बत्र पर स्थान प्राप्त कर लिया।''[8]

संदर्भ सूची

1. हरियाणा का इतिहास बुद्ध प्रकाश, पृष्ठ–73
2. 1857 के विद्रोह के कारण इग्नू, पृष्ठ–83
3. 1857 का इतिहास पुखराज जैन, पृष्ठ–123
4. हरियाणा का इतिहास बुद्धप्रकाश, पृष्ठ–23
5. वही
6. वही
7. हरियाणा का इतिहास बुद्धप्रकाश, पृष्ठ–73
8- हरियाणा विकीपीडिया का अंश